Course-2 unit-5

Peace Education

Ans What do you mean by Peace education? Discuss its needs.

शांति शिक्षा से तात्पर्य उन नियमों एवं निर्देशों से है जो समाज में शांति व्यवस्था को बनाय रखने में मदद करती है

महात्मा गाँधी के अनुसार – " अगर हम विश्व को वास्तविक शान्ति का पाठ पढ़ाना चाहते है तो हमे शुरूआत बच्चो से करनी होगी।

मारिया मान्टेसरी के अनुसार – " सारी शिक्षा शान्ति के लिए ही है।

शांति शिक्षा की अवधारणा हमारी शिक्षा व्यवस्था में बहुत पहले से ही रही है शांति की सलाह प्रत्येक शिक्षित एवं परिपक्व व्यक्ति द्वारा प्रदान की जाती थी। वर्तमान समय में अशांति की स्थिति ने इस शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही प्रारंभ करने के लिए विवश कर दिया है। बालक के मन मस्तिष्क पर शांति एवं अहिंसा की भावना उजागर कर दिया जाय तो पूरे विश्व में शांति होगी अतः वर्तमान समय में शांति शिक्षा की निम्नलिखित कारणों से आवश्यकता है।

(1) for the development of Social values ⇒

शांति शिक्षा की आवश्यकता बालकों में सामाजिक गुणों के विकास के लिए आवश्यक है जिससे समाज में शांति स्थापित की जा सके। समाज में विभिन्न लोग रहते हैं विभिन्न व्यवसाय के लोग, विभिन्न शैक्षिक योग्यता के लोग, विभिन्न मत हैं जिससे समाज में कलह उत्पन्न होती है। शांति शिक्षा के माध्यम से बालक में प्रेम, सहयोग एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है।

(2) for the development of social Justic ⇒

वर्तमान समाज में अनेक वर्गों को विकास के अवसर एवं अधिकार प्राप्त नहीं होते हमारे समाज में अनेकों तरह के असमानताएं देखने को मिलती है इससे बालकों के मन में ऊँच नीच की भावना उत्पन्न होती है इस स्थिति में शांति शिक्षा मानव समुदाय के लिए अत्यंत आवश्यक है इससे सामाजिक न्याय समाज में सभी को उपलब्ध होता है तथा सामाजिक अन्याय की

स्थिति उत्पन्न नहीं होती है। इस प्रकार सामाजिक न्याय को विकसित करने के लिए शांति शिक्षा आवश्यक है।

(वैश्विक विकास के लिए)
(3) for Global development

कोई भी राष्ट्र सभी दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं है उसे अपनी किसी न किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना ही पड़ता है ऐसी दशा में राष्ट्र अपनी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना ही पड़ता है। राष्ट्र अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु दूसरे राष्ट्र पर दबाव बनाते है और हिंसा अशांति का सहारा लेते है यह स्थिति किसी भी राष्ट्र के लिए उचित नहीं रहती है। ऐसी दशा में शांति की शिक्षा की आवश्यकता हो जाती है।

(4) for the development of Social unity ⇒

सामाजिक एकता के विकास के लिए भी शांति शिक्षा की प्रमुख रूप से आवश्यकता है

चारित्रिक विकास के लिए
(5) for the Character development

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि जब व्यक्ति चरित्रहीन से ग्रसित होता है तो उसका प्रत्येक कार्य सामाजिक अशांति उत्पन्न करता है क्यों की सामाजिक दृष्टि से इसे सही नहीं माना जाता है उसके दायित्व एवं व्यवहार के लिए शांति शिक्षा की ही आवश्यकता है जैसे आदर्शवाद, विवेकानन्द आदि विचारको या विचारधारा के द्वारा बच्चों में नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास किया जाता है।

(6) for the development of idealisim values

आदर्शवादी मूल्यों का वर्तमान समय में लगभग समापन हो गया है। आज के समय में लोग बच्चों को ऐसी शिक्षा देना चाहते है जो उनको धनोपार्जन योग्य बनाए व्यक्ति कहते है पैसा ही सब कुछ है। इस स्थिति में समाज की स्थिति पहले जैसी नहीं रही भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया इसलिए शांति शिक्षा के माध्यम से खोए हुए आदर्शों को पुनः स्थापित किया जाना आवश्यक है

(7) For the international Peace

शांति शिक्षा के परिणाम व्यापक एवं सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करने वाले होते है। बालक सम्पूर्ण पृथ्वी पर निवास करने वाले मानवों को अपना परिवार समझता है परिवार में कोई भी बालक विरोध नहीं करता। इस प्रकार यह भावना सम्पूर्ण विश्व के छात्रों में विकसित कर दी जाय तो सम्पूर्ण विश्व एक परिवार होगा। जब तक कोई व्यक्ति मानवता के गुणों से सम्पन्न नहीं होगा तब तक वह विश्व एवं ~~अन्त~~ अंतर्राष्ट्रीय ~~शान्ति~~ सद्भावना के में विचार नहीं कर सकता।

(8) For the Solution of Economical Problem

(आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए)

बेरोजगारी के कारण भी समस्या उत्पन्न होती है समाज में आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों के साथ शोषण कर समाज में अशान्ति फैलती है इस स्थिति में संघर्ष उत्पन्न होती है, बढ़ती बेरोजगारी, असमानता

और अच्छी नौकरियों की कमी इस दुनिया में अशान्ति पैदा करने में अहम भूमिका निभाती है इसके लिए सरकार द्वारा प्रयास करके गरीब व्यक्तियों का जीवन स्तर उठाने की कोशिश की जाए। शिक्षक का दायित्व है कि बालकों में वह चारित्रिक एवं नैतिक विकास करने के साथ-साथ उनके कर्तव्यों का भी बोध कराये। बालकों के साथ-साथ बालिकाओं के लिए भी समुचित शिक्षा की व्यवस्था की जाए तथा दोनों को अधिकार एवं उनके कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाए

(9) For the solution of religious Problem
(धार्मिक समस्याओं के समाधान के लिए)

धार्मिक समस्या को बिना हल किए हम एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं कर सकते है शांति शिक्षा को बढ़ावा देकर इसका समाधान किया जा सकता है। व्यक्ति को धर्म का वास्तविक ज्ञान कराने का प्रयास किया जाता है क्योंकि प्रत्येक धर्म में मानवता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना को बढ़ावा दिया गया है। धर्म की आड़ में होने वाले विभिन्न अपराधिक एवं

P.T.O

अनैतिक कार्यों को रोकना धार्मिक समस्याओं का समाधान है

गतिशील सामाजिक वास्तविकता के रूप में शांति

शान्ति एक सामाजिक वास्तविकता है जो सामाजिक परिवर्तन समस्या आवश्यकता एवं परिस्थिति के आधार पर गतिशील रहती है। इनमे हमेशा परिवर्तन या बदलाव होते रहते है व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिस्थितियों में बदलाव के कारण संतोष एवं शांति की अवधारणा में समय समय पर परिवर्तन होते है एवं एक परिस्थिति में शान्ति की प्राप्ति के उपरांत दूसरी परिस्थिति शान्ति की आवश्यकता एवं उसके स्तर में गतिशीलन देखा जा सकता है

Dynamic Aspect of Social Peace

(1) सामाजिक शान्ति (२) आर्थिक शान्ति

(3) धार्मिक शान्ति (4) राजनैतिक शान्ति

(5) मानसिक शान्ति (6) राष्ट्रीय शान्ति

उपरोक्त सभी आयामों में गत्यात्मक पायी जाती है जो शान्ति की अवधारणा को गत्यात्मक स्वरूप प्रदान करती है।

(1) सामाजिक शान्ति ⇒ व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए शुरुआती इसकी समाज से होती है समाज में कुछ ऐसे तत्व होते है जो समाज की एकता को तोड़ना चाहते है जिसके लिए वह निरन्तर प्रयास भी करते है समाज में अशान्ति फैलाने वाली कुछ प्रथाएं कुछ मुद्दे है जो अशान्ति उत्पन्न करती है जैसे दहेज प्रथा एवं बाल विवाह, तलाक का मुद्दा इस समस्या को शान्ति शिक्षा के द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। बालक बालिकाओं में विभेद किया जाना, समाज की एक अहम समस्याओं में से एक है।

(2) आर्थिक शान्ति ⇒ वर्तमान समय में व्यक्तियों में धन के प्रति अधिक लगाव बढ़ा है जिससे वह गलत कार्यों में लिप्त हो कर अपना एवं समाज का नुकसान पहुंचा रहे है। वर्तमान व्यवस्था में अत्यधिक असमानता देखने को मिलता है व्यक्तियों के अन्दर कर्तव्यों का बोध कराया जाए तथा भारत देश के प्रत्येक नागरिकों को सरकार द्वारा प्रयास करके गरीब व्यक्तियों का जीवन स्तर

उठाने की कोशिश की जाए। गरीब मजदूरो के शोषण को रोका जाए।

(3) धार्मिकशान्ति → भारत जैसे देश में जहाँ विभिन्न धर्मो के मानने वाले लोग है वहाँ धार्मिक क्षेत्र में फैली अशान्ति को हटाने का प्रयास किया जाना चाहिए लोगों में अपने धर्म को सर्वोपरि मानना तथा दूसरे के धर्म को निम्न समझना धार्मिक भावना व्यक्ति में मानवता की भावना को खत्म कर देती है। धार्मिक समस्या को बिना हल किए हम एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं कर सकते है अतः यह जरूरी है कि शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देकर इसका समाधान किया जा सकता है।

(4) राजनैतिकशान्ति ⟹ राजनैतिक पार्टियो द्वारा शान्ति भंग करना एक आम बात है राजनैतिक पार्टियो द्वारा अपने फायदे के लिए समाज एवं राष्ट्र में हिंसा की घटनाए कराई जाती है जिससे देश की आम जनता को इसका नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि जनता को

समझ इतनी विकसित नहीं हो पाती है कि वह विभिन्न पार्टियों की चालाकियों को समझ सके तथा उससे सतर्क रह राजनैतिक इच्छा शक्ति की पूर्ति के लिए सामाजिक अशान्ति पैदा नहीं करना चाहिए बल्कि समाज को एक सूत्र में पिरोने एवं समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

(5) मानसिक शान्ति ⇒ Mental Peace

विवाद की स्थिति में व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार के कुत्सित विचार आते हैं। इस प्रकार के विचारों से मानसिक अशांति उत्पन्न होती है। जब विवाद का शांतिपूर्ण हल सम्भव होता है तो व्यक्ति के मन में शांति का अनुभव होता है। व्यक्ति की मानसिक शांति एक ओर उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि करती है वहीं दूसरी ओर उसको विविध प्रकार के रोगों से मुक्त करने का प्रयास करती है। विवादों का कोई अंत नहीं होता उसके द्वारा असमान्य एवं असमाजिक

परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है। इन परिस्थितियों को समाप्त करने के लिए ही विवादों के शांतिपूर्ण हल खोजे जाते हैं।

(b) राष्ट्रीय शान्ति ⇒ जब दो या दो से अधिक व्यक्ति क्षेत्र, जाति, लिंग, धर्म, संस्कृति व्यवसाय के आधार पर विभिन्नता पाई जाती है लेकिन राष्ट्रीय एकता किसी राष्ट्र के व्यक्तियों के बीच समान हित के आधार पर विकसित वह भावना है जो उन्हें क्षेत्र, जाति, लिंग, धर्म, संस्कृति व अन्य आधारों की भिन्नता होते हुए भी अपने राष्ट्र में बाँधती है। सामान्य रूप से राष्ट्रीय स्तर पर राज्यों के मध्य एक किसी राज्य सरकार द्वारा उत्पन्न समस्या का उचित समाधान के लिए केन्द्र द्वारा प्रयास किया जाता है शांतिपूर्ण हल खोजा जाता है जिससे राष्ट्रीय शान्ति बनती है।

प्रश्न → शांति की प्रासंगिकता : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

उत्तर → राष्ट्रीय एकता किसी राष्ट्र के व्यक्तियों के बीच समान हित के आधार पर विकसित वह भावना है जो उन्हें क्षेत्र, जाति, लिंग, धर्म, संस्कृति व अन्य आधारों की भिन्नता होते हुए भी अपने राष्ट्र में बांधती है। और 'मैं' के स्थान पर हम सब की भावना को विकसित करते है और यह शांतिप्रिय विचार शांति शिक्षा के द्वारा ही संभव है। इसके द्वारा मानव के विचार इतने व्यापक हो जाते है न्याय और अन्याय को समझते है। शांति शिक्षा के माध्यम से ऐसी आध्यात्मिक मनोवृति का विकास करना कि वे

वसुधा कुटुम्बकम् धरती ही परिवार है

सबको प्यार कर सकें।

अन्तर्राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसके अनुसार व्यक्ति केवल अपने राष्ट्र का ही सदस्य नहीं होता बल्कि वह संपूर्ण विश्व का नागरिक है। अन्तराष्ट्रीय शांति के लिए शांति शिक्षा के परिणाम व्यापक एवं सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करने वाले होते है। महात्मा गान्धी एवं वैदिक साहित्य की चर्चा सम्पूर्ण विश्व में आज भी होती है क्योंकि दोनो के साहित्य में शांति की भावना समाहित है तथा कलह एवं विवाद का कोई स्थान नहीं है। शांति शिक्षा के माध्यम से छात्रो में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का विकास किया जाता है। बालक सम्पूर्ण पृथ्वी पर निवास करने वाले मानवो को अपना परिवार समझता है। परिवार से कोई भी बालक विरोध नहीं करता। इस प्रकार यह भावना सम्पूर्ण विश्व के छात्रों में प्राथमिक स्तर से ही विकसित कर दी जाय तो सम्पूर्ण विश्व एक परिवार होगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण शांति होगी जब शांति शिक्षा का प्रचार

(3)

प्रसार स्थानीय स्तर पर किया जायगा तो इसका प्रभाव राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिलता है। भारतीय समाज में शांति एवं सहानुभूति के मूल्यों को स्वीकार किया जाता है इस तथ्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी स्वीकार किया जाता है। इस तथ्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वीकार किया जाता है कि प्रत्येक समस्या समस्या का समाधान करते हुए प्रत्येक बालक को प्राथमिक स्तर पर शांति शिक्षा प्रदान करें तो सम्पूर्ण विश्व को एक आदर्श समाज के रूप में विकसित करने में सफलता प्राप्त हो सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए शिक्षा उपयोगी है इसलिए हमें शिक्षा में कुछ बदलाव करने चाहिए

शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए की उसका मेन उद्देश्य विश्व नागरिकता का प्रचार करना, विश्व शांति का प्रचार करना

(1) Promotion of world citizenship
विश्व नागरिकता का प्रचार

(2) Promotion of world Peace.
(विश्व शांति का प्रचार)

(4) विनाशकारी भावना के बजाय हमें निर्माणकारी सोच को बढ़ावा देना होगा

(5) छात्रों में विश्वास विकसित करना विश्वास किसके लिए एक दूसरे के राष्ट्रों का आदर करने के लिए एक देश जब दूसरे देश पर विश्वास रखेगा तब ही जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना है वह अच्छी तरह विकसित हो पाएगी

- curriculum (पाठ्यक्रम) कैसा होना चाहिए

curriculum broad होनी चाहिए यानी विस्तृत होनी चाहिए क्यों की हम विश्वनागरिकता की बात कर रहे हैं तो curriculum विस्तृत होनी चाहिए जैसे कुछ विषय होते हैं इतिहास, Geography, S.ST यानी सामाजिक विज्ञान इन सब चीजों में देश विदेश के ज्ञान शामिल होने चाहिए ताकी छात्रों को अपने देश के ज्ञान के साथ-साथ दूसरों देश की भी ज्ञान प्राप्त हो।

Knowledge of various cultures of the world
(दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान

co-curricular activities
(पाठ सहगामी क्रियाएँ)

(1) Celebrating birth anniversaries
(जयंती मनाना)

(2) International games (अंतराष्ट्रीय खेलों का आयोजन - खेलों का आयोजन होने चाहिए या देखने को मिलने चाहिए। इस से क्या होता है हम एक दूसरे के culture के बारे में जानते हैं।

(3) News of other countries
(अन्य देशों की खबर)

(6)

Teacher (अध्यापक)

शिक्षक शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि शिक्षक वह माध्यम है जिसके द्वारा पाठ्यक्रम को लागू किया जाता है और उसके लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। शिक्षक जो है curriculum से ज्यादा Important

होता है क्योंकी curriculum को हम तक पहुंचाना complete करवाना यह सारी जिम्मेदारी Teacher की है।